Shodh-Rityu तिमाही शोध–पत्रिका

PEER Reviewed & Refereed JOURNAL

ISSUE- webinar special IMPACT FACTOR **- SJIF-6.586,** IIFS-4.125, ISSN-2454-6283

AN INTERNATIONAL MULTI-DISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

अंतरराष्ट्रीय बहु भाषीय एवं बहु शाखीय शोध-पत्रिका

पूना कॉलेज, पूना, अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी, इक्कीसवी सदी में हिंदी साहित्य और मिडिया का बदलता स्वरूप 06 मार्च, 2020
वेबीनार विशेषांक प्रकाशन दिनांक–रविवार, 15 अगस्त 2021

AUGUST 15, 2021

Shodh-Rityu तिमाही शोध–पत्रिका

PEER Reviewed & Refereed JOURNAL

अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी

इक्कीसवी सदी में हिंदी साहित्य और मिडिया का बदलता स्वरूप

06 मार्च, 2020

ISSUE- webinar special IMPACT FACTOR **- SJIF-6.586,** IIFS-4.125, ISSN-2454-6283

AN INTERNATIONAL MULTI-DISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

वेबीनर विशेषांक प्रकाशन दिनांक–रविवार, 15 अगस्त, 2021

ISSN-2454-6283 PEER Reviewed JOURNAL

सम्पादक

डॉ.सुनील जाधव ,नांदेड

9405384672

तकनीकी सम्पादक

अनिल जाधव, मुंबई

पत्राचार हेतु पता–

महाराणा प्रताप हाउसिंग सोसाइटी, हनुमान गढ़ कमान के सामने, नांदेड–431605

अनुक्रमणिका

1.इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का प्रिंट मीडिया पर प्रभाव–*डॉ. (श्रीमती) अनसूया अग्रवाल,* 9
2.मीडिया का बदलता स्वरूप–*डॉ. श्रीमती मृदुला शुक्ला*.....11
3–साहित्य एवं मीडिया का समाज पर प्रभाव–*डॉ.नुरजाहान रहमातुल्लाह* 14
4–इक्कीसवीं सदी की हिन्दी कविता में मानवीय संवेदना के आयाम–*डॉ. प्रिया ए.*.....16
5.साहित्य और मीडिया–*सुरजीत कौर*.....18
6.बदलते परिप्रेक्ष्य में साहित्य और मीडिया की भूमिका–*डॉ. कुसुम कुंज मालाकार*.....20
7.इक्कीसवी सदी में बदलता हुवा नारी स्वरूप–*तोंडचिरकर मीना बाबूराव*.....22
9.आधुनिक हिन्दी साहित्य के विविध परिदृष्य–[1]*प्रा. डॉ. रमा दुधमांडे,* [2]*प्रा. डॉ. शिल्पा जिवरग* 25
10. इक्कीसवीं सदी के हिंदी उपन्यासों में विभिन्न विमर्श–*डॉ. बालासाहेब सोनवने,*.....27
11.वेब मीडिया और हिन्दी–प्रा. सौ. संजीवनी रा. नाईक.....29
13. वेब मीडिया एवं भाषा अध्यापन–*डॉ. भाऊसाहेब नवनाथ नवले* 35
14.साहित्य एवं मीडिया का समाज पर प्रभाव–डॉ.समीर गुलाब सय्यद 38
15.'विखार विळखो' उपन्यास में नारी विमर्श–छाया रत्नाकर पांढरकर 40
16.इक्कीसवीं सदी में हिन्दी साहित्य का बदलता स्वरुप–डॉ.दत्ता साकोळे 42
17.इक्कीसवीं सदी की हिंदी कविताओं में मूल्य परिवर्तन(मणि मोहन की कविताओं के विशेष संदर्भ में)–*डॉ.प्रवीणकुमार न. चौगुले*44
18.वृद्ध विमर्श और गिलिगडु उपन्यास–देशमुख शहेनाज अ.रफिक 47
19.इक्कीसवी सदी के साहित्य एवं मीडिया में मूल्य परिवर्तन–*डॉ.दिलीपकुमार कसबे*.....49
20.मीडिया और साहित्य–प्रा. दिपाली तांबे.....52
21.इक्कीसवी सदी का उपन्यास साहित्य और स्त्री विमर्श–*डॉ द्वारका गिते* 54
22.हिंदी पत्रकारिता और साहित्य में अंतः सम्बन्ध–*डॉ.नवनाथ गाड़ेकर*.....56
23.इक्किसवी सदी की कहानियों में स्त्री विमर्श–मेहरून्निसा परवेज की कहानियों के संदर्भ में–*डॉ.गजाला वसीम अब्दुल बशीर शेख* 58
24. इक्कीसवीं सदी के हिन्दी उपन्यास साहित्य में मूल्य परिवर्तन :विभूति नारायण राय लिखित उपन्यास 'घर' के विशेष सन्दर्भ में निमन्त्रित सदस्य, *प्रा. डॉ. विनोदकुमार विलासराव वायचळ* 'वेदार्थ' 61

ISSN-2454-6283 PEER Reviewed JOURNAL

18.वृद्ध विमर्श और गिलिगडु उपन्यास

–देशमुख शहेनाज अ.रफिक
कला वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, सोनई

नारी अस्मिता और मानवीय विकास से जुडे मसलो पर अपने रचनात्मक लेखन और सांस्कृतिक सहभागीता निभाने वाले लोगो में हिन्दी की नामचीन लिखिका चित्रा मुद्गल का नाम अग्रगण्य है । इन्होने अपने उपन्यास 'आवा', 'एक जमीन अपनी' और 'गिलिगडू' के माध्यम से विशेष स्त्री विमर्श और उपेक्षित बुजूर्गो की समस्या को उजागर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है । वर्तमान मे वृद्धो को केंद्र में रखकर कई उपन्यास लिखे गए जिसमे चित्रा मुद्गल द्वारा लिखित उपन्यास 'गिलिगडू' है । इसमे बुढापे का दर्द, घर मे उपेक्षित व्यवहार तथा दर–दर की ठोकरे खाते घर से निकाले गए वृद्धो के जीवन की व्यथा को चित्रित किया गया है । यह आकार में छोटा लेकीन संवेदनशीलता का अथाह भंडार है । इसमें तेरह दिन की कहानी के माध्यम से उपन्यास के मुख्य पात्र सेवानिवृत्त सिविल इंजिनियर बाबु जसवंत सिंह व सेवानिवृत्त कर्नल स्वामी (विष्णु नारायण स्वामी) के जीवन का पुरा खाका ही नही अपितू आज के जीवन मूल्य के परिप्रेक्ष में घर व परिवार मे बुजूर्गो की वास्तविक स्थिति का चित्रण बडी बेबाकी से हुआ है । इस उपन्यास में प्रमुख रूप से संयुक्त परिवार का बिखराव, परिवार में बुजूर्गो की भूमिका और वर्तमान परिवार माहौल में उनकी वास्तविक स्थिति को कई प्रसंगो के माध्यम से उजागर किया गया है ।

गिलिगडू का शाब्दिक अर्थ 'चिडिया' है । मलयालम में चिडिया को 'किलि कलु' कहा जाता है । जिसका हिन्दी अनुवाद गिलिगडू किया गया है और प्रस्तुत उपन्यास में कर्नल स्वामी की पोतियों के लिए 'गिलिगडू' शब्द का प्रयोग किया गया है । 'गिलिगडू' में ऐसे दों बुजूर्गो की कहानी है घर परिवार और आर्थिक रूप से समर्थ होते हुए भी अकेले है । हमारे समाज में बुजूर्गो की तीन श्रेणीया है । एक वे है जिनका कई परिवार नही है इसलिए अकेले रहने को मजबूर है, दुसरे वे जो भरा–पुरा परिवार होते हुए भी अकेले राहने को बाध्य है और तीसरे वो है जो परिवार में रहते हुए भी अकेले है । इस उपन्यास में तीनो तरह के पात्र मौजुद है । उपन्यास के अंत में आए पात्र मिस्टर और मिसेस श्रीवास्तव जो की कर्नाल स्वामी के पडोसी है वह इसलिए अकेले रहते है क्योकि उनकी कोई औलद नही है । लेकीन कर्नल स्वामी की स्थिति देखकर उनको कोई मलाल नही है की उनकी कोई औलद नही है । मिसेस श्रीवास्तव कहती है "ऐसी कसाई औलद से तो आदमी निपुता भला । हमें इस बात का कोई गम नही कि हमारी कोई अपनी औलाद नहीं ।"[1] वही उपन्यास का महत्वपूर्ण पात्र कर्नल स्वामी जिनका भरा पुरा परिवार है आर्थिक स्थिति भी काफी अच्छी है लेकीन फिर भी वह अकेले है । पत्नी के मृत्यू के पश्चात वह अकेले रहते है हलांकी वह इस बात को कभी किसी के सामने आने नही देते । इस बात का खुला सा उनकी मौत के बाद उनकी पडोसी मिसेस श्रीवास्तव बाबु जसवंत सिंह के सामने करती है तभी पाठक इस बात से रूबरू होता है । इस उपन्यास का सबसे महत्वपूर्ण पात्र बाबु जसवंत सिंह है जो परिवार में रहते हुए भी अकेला है क्योकी वह उनके परिवार के लोगो को उपयोग हीन लगने लगते है ।

वर्तमान समय में हमारे समाज की कितनी बडी त्रासदी है की वह व्यक्ति जो जीवन भर काम करते हुए परिवार का भरण पोषण एवम नेतृत्व करता था वृद्ध हो जाने पर तथा काम छूट जाने पर उसे के परिवार के वही लोग जो एक समय उस पर आश्रित रहते थे अब उस पर अपमान जनक टिप्पणीया करने से नही चुकते । बाबु जसवंत सिंह का बेटा नरेंद्र और बहू सुनयना उन्हे अपमानित करने का कोई मौका नही छोडते । बाबु जसवंत सिंह परिवार में रहकार भी अकेले थे क्योकि परिवार के किसी सदस्य के पास उनके लिए समय नही था । इस कारण जसवंत बाबु धिरे–धिरे आत्मकुंठित होकार मानसिक रूप से कमजोर होते जा रहे थे । एक समय येसा आता है जहा तेज बुखार के कारण उनका दिमागी संतुलन चला जाता है और वह पांच दिन अस्पताल में भारती होना पडता है । जसवंत बाबु उन बुजूर्गो का भी प्रतिनिधित्व करते है जो समाज में इस बिमारी के शिकार हो रहे है ।

प्रस्तुत उपन्यास में बाबु जसवंत सिंह के बचपन के मित्र हरिहर दुबे के माध्यम से लेखिका ने आज समाज की वास्तविक स्थिति का वर्णन करते हुए समाज व्यवस्था का भांडा

फोड किया है । हरिहर दुबे का परिवार है लेकीन कुछ ही दिन पहले वो कलकत्ता से अपने आंखों का आपरेशन करके कानपुर आए थे ।वह अकेले रहते थे । तीन दिन बात उनके घर से बदबू आने लगी तब पडोसीयों ने घर का दरवाजा तोडा तो हरिहार दुबे की लाश पडी हुई थी । आज हमारी समाज व्यवस्था ऐसी हो गई है की हमारे पडोसी कौन है ? घर आए है या नही ये जानना भी हम हमारा कर्तव्य नही समझते । आज कल महानगरीय परिवेश में यह समस्या बढ रही है । हाल ही में मुंबई और पुणे जैसे महानगरो के संदर्भ में यह समाचार सुनने को मिले । आज वर्तमान समय में वृद्धो के प्रती समाज और उनके बच्चो का कोई दायित्व नही रहा है । यह गंभीर समस्या हमे सोचने को बाध्य करती है ।

जो कभी घर का मुखिया हुआ करता था ।वह बुढा होने पर जायजात के लिए अपनी औलद से पिटा भी जाता है । लेखिका इस समस्या का वर्णन कर्नल स्वामी के माध्यम से करती है । कर्नल स्वामी ने अपना एक प्लॉट बेचकर उसके पैसे अपने तीनो बेटों में बराबर बांट दिए थे लेकिन फिर भी उनका मझला बेटा नोएडा वाला फ्लॅट बेचना चाहता था । कर्नल स्वामी जब फ्लॅट बेचने से मना करते है तो उनका बेटा उन्हे पिटता है । उनकी चिखने की आवाज सुनर मिसेस और मिस्टर श्रीवास्तव ने उन्हे बचाया था । लेकिन फिर भी कर्नल स्वामी ने अपने पुत्र के खिलाफ पोलिस स्टेशन में रिपोर्ट नही लिखवाई । सरकार बुजूर्गो को काफी अधिकार देने के बारे में सोच रही है लेकिन बुजुर्ग उन अधिकारों का सही उपयोग नही कर रहे है ।

ठीक उसी प्रकार बाबु जसवंत सिंह के बेटा–बहू चाहते है कि वह अपना कानपुर वाला लॉकर सरेनडर कर दे । लॉकर का किराया उन्हे फिजूल खर्च लगता है । फिजूल खर्च तो एक बहाना है असल में वे उस लॉकर में पडे किमंती गहणे पाना चाहते है । इस काम में उनकी बेटी शालिनी भी भैय्या–भाभी के साथ है जब की बाबु जसवंत सिंह को अपने बेटी पर पुरा भरवसा था लेकिन वह भी जायजात की भुखी निकाली । वह टेलेफोन पर बाबु जसवंत सिंह को लॉकर सरेंडर करने के लिए कहती है । बाबु जसवंत सिंह के मना करने के बाद वह कहती है "लॉकर में अभी है तो बहुत कुछ बाबुजी । अम्मा के अपने कई सेट, पांच तोले की आजीवाली नथ, चांदी का ढेरो समान ।" [2]उसकी यह बात सुनकर बाबु जसवंत सिंह को बडा आघात पहूंचता है क्योकि उन्हे शालिनी से इस प्रकार की उम्मीद नही थी । बाबु जसवंत सिंह अपने पत्नी की चिजे किसी को देना नही चाहते है । उसकी यादों को वह संभालकर रखना चाहते थे ।

बाबु जसवंत सिंह को सबसे बडा आघात तब पोहचता है जब उन्हे शालिनी बताती है की नरेंद्र का काम अमेरिका में होने वाला है और वह अगले महीने नियुक्ती पत्र आने पर अमेरिका जा रहा है । इसलिए वह बाबु जसवंत सिंह की रहने की व्यवस्था वृद्धाश्रम में कर रहा है । उसका मानना है की वहा बाबूजी के हम उम्र वाले लोग होंगे तो उनका समय आसानी से बीत सकता है । हा लेकिन उस पर जो अतिरिक्त खर्च होंगा उसे उठाने के लिए वह तैयार है । जैसे ही इस बात का पता चलता है वह सोचने को विवष हो जाते है की शालिनी कह सकती थी की बाबूजी को अपने साथ ले जाओ या उन्हे मेरे घर छोड जाओ लेकिन शालिनी ने वृद्धाश्रम की बात की । इस वजह से बाबु जसवंत सिंह के दिल को ठेस पहूंची । आज उच्च विभूषित लोग अक्सर विदेश जाते समय अपने माता–पिता को वृद्धाश्रम में छोड जाते है । आज दिन–ब–दिन समाज में वृद्धाश्रम की समस्या बढ रही है । उपभोगतावादी दुनिया में मुनाफा सबसे प्रमुख है और इसीलिए जसवंत बाबु सोचते है कि अगर उन्होने अपनी पत्नी की तरह अछा खाना बनाना सीख लिया होता तो शायद वह अपनी बहू सुनयना के कुछ काम आ सकते थे । बाबु जसवंत सिंह चाहते है कि वह अपने पोतों के साथ खेले, उनसे बाते करे इसलिए वह मलय के जन्मदिन पर उसे बाहर ले जाना चाहते है साथ ही उसके जन्मदिन का पुरा खर्च करना चाहते है । मलय बताता है की वह अपना जन्मदिन केवल अपने मित्रो के साथ मना रहा है । उसमे कोई बडा व्यक्ति शामिल नही हो सकता । एक प्रकार से बच्चो को सभी से अलग किया जा रहा है । चित्रा मुद्गल इस संदर्भ में लिखती है "बुद्धी विकास की आड में बडी खुबसुरती से बच्चो को संवेदनाच्युत किया जा रहा इतना कि बच्चे कभी परिवार में न लौट सकें, न कभी अपना कोई परिवार गढ सके ।"[3]

वर्तमान समय में स्त्री पुरुष दोनो कामकाजी होने के कारण वह अपने बच्चो को शिशुघर में छोडना अछा समझते है

लेकिन वही बच्चा अपने दादा दादी की गोद में खेलना उन्हे मंजूर नही । कर्नल स्वामी की पोतियां कात्यायनी और कुमुदिनी की मा उन्हे छोडकर चली गई । जब की कर्नल स्वामी उनकी देखभाल भली भाती कर सकते थे लेकिन फिर भी उनका बेटा श्रीनारायन अपनी दोनो जुडवा बच्चियों को हैदराबाद के हॉस्टेल में डाल देता है द्य

अपनी आर्थिक स्थिति ठीक होने के कारण ही कर्नल स्वामी और बाबु जसवंत सिंह वृद्धाश्रम में नही रहे । अगर उनकी आर्थिक स्थिति अछी नही होती तो दोनो को मजबुरन वृद्धाश्रम जाना पडता । कर्नल नोएडा वाला मकान बेचते और बाबु जसवंत सिंह अपना कानपुर वाला तो शायद जसवंत बाबु अंत में कानपुर जाने के बारे में कभी नही सोचते । पिता के संदर्भ में असलम हसन की एक कविता इस उपन्यास के पात्र बाबु जसवंत सिंह और कर्नल स्वामी पर सार्थक बैठती है–बच्चे बडे हो गए/और बौना हो गया पिता /घर का एक बेकाना कोना बिछौनाहो गया है पिता /अपने पांव पर खडे हो गए /खेलते बच्चे और खिलौना हो गया है पिता ।[4]

निष्कर्षतः हम कह सकते है कि वर्तमान उदारीकरण और भुमंडल के दौर में व्यक्ती की व्यस्तता के चलते समझौता दोनो पक्षों को करना होंगा । पुरानी पिढी को नई पिढी के साथ सामाजस्य बैठाना होंगा और नई पिढी को पुरानी पिढी के साथ । उपन्यास 'गिलिगडू' कर्नल स्वामी और जसवंत सिंह की करूण कहानी है । बुजूर्गो को इस तरह उपेक्षित और असह्य छोडकर हम इस समस्या का समाधान नही खोज सकते । हमे इस समस्या का समाधान ढुंढना होंगा । समाज में बुजूर्गो को बेकार न समझकर उनकी उपयोगिता स्थापित करनी होंगी । नई पिढी को बुजूर्गो के ज्ञान और अनुभव का उपयोग करना चाहिए । जिससे समाज में समतोल बना रहे और परिवार व्यवस्था टिकी रहे ।

संदर्भ सूची

1गिलिगडू–चित्रा मुद्गल, सामायिक प्रकाशन, संस्करण 2018पृष्ठ–138

वही. पृष्ठ –95

–3वही, पृष्ठ–34

19.इक्कीसवी सदी के साहित्य एवं मीडिया में मूल्य परिवर्तन

–डॉ.दिलीपकुमार कसबे

अध्यक्ष, हिंदी विभाग

सदगुरु गाडगे महाराज कॉलेज, (स्वायत्त) कराड.

साहित्य लेखन प्राचीन काल से चली आयी हुई एक कला है। मनुष्य को सामने रखकर साहित्य लेखन किया जाता है अर्थात मानव जीवन का पूरा लेखा जोखा साहित्य के माध्यम से चित्रित होता है जिस प्रकार साहित्य का संबंध मानव जीवन से है ठीक वैसे ही आधुनिक काल की देन मीडिया (प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रॉनिक मिडिया) इनका भी मानव ही केंद्र है। इन दोनों साधनों से मनोरंजन, उपदेश, सामाजिक परिवर्तन योग्य ज्ञान, यानी मनुष्य जीवन की सर्वांगता को उचित मानकर सभी प्रकार की जानकारी ये दोनों माध्यम साहित्य और मीडिया, लिखित और दृक–श्रवण माध्यम से देते रहते हैं। इसीकारण इन दोनों साधनों ने समाज में अपना एक स्थायी स्थान बनाकर रखा हुआ है। आज इनके परिवर्तन के कारण मूल्य में भी परिवर्तन हुआ हैं। इक्कीसवी सदी में तो तेज बदलाव आ रहे हैं।

साहित्य को सामने रखा तो हिंदी साहित्य के महान चिंतक रचनाकार आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी ने हिंदी साहित्य का आरंभ विक्रम संवत 1050 से माना है। हिंदी में वीर गाथा रचनाओं से माना है उनका कहना है ''साहित्य का इतिहास जनता की चित्तवृत्ति का इतिहास होता है। जनता की चित्तवृत्ति तत्कालीन परिस्थितियों से परिवर्तित होती है। अतः साहित्य का स्वरुप भी इन परिस्थितियों के अनुरुप बदलता है'' [1] अतः उनका कहना है कि तत्कालीन परिस्थितियों के अनुरुप साहित्य लेखन का कार्य चलता था। प्राचीन काल में साहित्यकार राजाश्रित थे वे सभी साहित्यकार केवल साहित्यकार न थे बल्कि वे लेखनी और तलवार चलाने में निपुण थे युद्ध के समय अपने राजा के साथ युद्ध पर जाते थे और स्वयं खेले देखे युद्ध का ऑखों देखा हाल का चित्रण, युद्ध विराम के समय करते थे। उनके लेखन में अपने राजा के पराक्रम शौर्य और वीरता का ओजपूर्ण चित्रण के साथ शत्रु सैन्य और पर राजा की शक्ति और लडने की पद्धति का वर्णन भी रहता था। आदिकाल में हिंदी साहित्य में पृथ्वीराज रासो के रचयिता